

class - B.A. Part - II

Sub - Hindi (Hon) Paper - III

by Ravishankar Kumar

① उत्तर आधुनिक काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख करें।

उत्तर - उत्तर आधुनिक काव्यधारा का आशय है राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा। राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवियों में चिंतक, विचारक, समाज-सुधारक एवं देश-प्रेमी का रूप प्रबल है।

इस धारा की कविताओं के मूल में पीड़ा की अनुभूति है, चूंकि इनका उद्देश्य जन-चिंतना पैदा करना है। अतः वैचारिकता एवं उपदेशात्मकता अधिक है। अर्थात्, कविव्व पर चिंतक, विचारक, समाज-सुधारक व देश-प्रेमी का रूप हावी है।

उत्तर आधुनिक काव्यधारा में हमें प्रखर कवियों की जमात देखने को मिलती है जिनकी चर्चा के बिना हिन्दी काव्य का इतिहास पूरा नहीं होगा। पहले रामेश्वर शुक्ल अंचल व फिर हरिवंश राय बच्चन के आने से यह नया परिदृश्य सामने आता है। इस दौर के कवियों की अपनी अपनी मानसिकता है किंतु एक सामान्य बात यह है कि इन कवियों ने जीवन के अनुभव को सीधी-सरल भाषा में डालि-

व्यक्त किया। मगधवादी चरण वर्मा, बच्चन सुमन, अंचल आवि की कविताएँ इस पुस्तक में स्मरणीय हैं। एक तरह से कहें तो दायवादी व प्रगतिवादी काव्य के बीच की जगह को इन कवियों ने पाटा है। इनके स्वर मिले-जुले हैं। निम्न पंक्तियाँ प्रष्टव्य हैं।

॥ है चिन्ता की राख कर में
स मांगती सिंदूर दुनियां,

लड़वाते हैं मंदिर - मस्जिद

मैल कराती मधुशाला,

च्यानाकर्षक तथ्य है कि

उत्तर आधुनिक काव्य चारों ओर वहाँ में बिहार के कवियों का विशेष योगदान है। इनमें जानकी बल्लभ शास्त्री के अतिरिक्त गोपाल सिंह नेपाली, केदारनाथ मिश्र, प्रभात आरसी प्रसाद सिंह आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

उत्तर आधुनिक काव्य चारों ओर नारें तत्कालीन समस्याओं, राजनीतिक परतंत्रता, सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक शोषण तथा गरीबी से संबंधित हैं। इनका लक्ष्य जनता को जगाना, तत्कालीन लक्ष्य-सिद्धि के लिए जन-चेतना पैदा करना था।